Bhaja Cave Architecture

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – III, B.A. 2nd Year

यों तो हम देखते है कि गुफा का इतिहास काफी प्राचीन है जिस समय साँची, भरहुत, बोधगया आदि स्थानों पर अशोक द्वारा निर्मित स्तूपों का पुनर्निर्माण किया जा रहा था उसी समय भारत के दुसरे क्षेत्रों में एक भिन्न प्रकार की निर्माण शैली का विस्तार किया जा रहा था, जिसमें चैत्यों तथा विहारों का मुख्य स्थान है । पहाड़ो को खोदकर बनाये जाने वाले गुफा स्थान को चैत्य कहते थे । धीरे - धीरे इस कला का विकास काफी वृहत पैमाने पर किया जाने लगा । छोटी - बड़ी गुफाओं को लेकर लगभग 1200 गुफा भारत के विभिन्न स्थानों में उत्कीर्ण करवाए गए । गुफा निर्माण का इतिहास हम लगभग तीसरी शताब्दी ई. पू. मान सकते है, जो प्रारंभिक मध्यकाल तक चलता रहा । उसी समय पश्चिम भारत में भी गुफा निर्माण का दौर चलता रहा था । आधुनिक भारत के महाराष्ट्र के कई भागों में लगभग दूसरी शताब्दी ई.पू. से गुफाओं का निर्माण प्रारम्भ हुआ जो 9वीं शताब्दी तक चलता रहा । नासिक के चारो ओर 200 मील के घेरे में लगभग 900 गुफा मंदिरों का निर्माण हुआ । पश्चिम भारत में सबसे प्राचीन गुहा/गुफा कठियाबाड़ में जूनागढ़, तलाज तथा सां नामक स्थानों पर है । इसके बाद बम्बई के पूर्वांचल में मोरघाट पहाड़ियों पर गुफाओं का निर्माण हुआ जिसमें भाजा, बेड्स, कार्ले, जुन्नार, अजन्ता प्रमुख है ।

गुफा शैली के चैत्यों में सबसे प्रमुख भाजा चैत्य माना जाता है । यह शुंग काल के आरम्भ में लगभग दूसरी शती ई.पू. में बौद्ध स्थापत्य का केंद्र बना । भाजा गुफाएं या भाजे

गुफाएं 22 रॉक-कट गुफाओं का एक समूह है जो महाराष्ट्र के लोनावाला के पास पुणे जिले में स्थित दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की है। यह महाराष्ट्र में हीनायान बौद्ध धर्म संप्रदाय से संबंधित है। गुफाओं में कई महत्वपूर्ण स्तूप हैं जो उनकी महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक हैं। सबसे प्रमुख उत्खनन इसकी चैत्य (या चैत्यगृह - गुफा XII) है, जो लकड़ी के वास्तुकला से इस रूप के प्रारंभिक विकास का एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें एक घुमावदार घोड़े की नाल छत है। ये चैत्यगृह 55 फुट लम्बा तथा 26 फुट चौड़ा है । इसका प्रवेश द्वार काष्ट शिल्प से अलंकृत था, जो अब नहीं है, महरौली द्वार की भांति प्रतीत होता है उन्हें फ़साने वाले कील की बारीक़ छिद्र अब तक विद्यमान है । भरहुत, बोधगया, आम्भी आदि के नमूने को देखकर इसका अनुमान लगाया जाता है। प्रवेश द्वार के मुख से लगा हुआ गोलम्बर जो अंग्रेजी के 'H' के आकार के लकड़ी के फ्रेम जैसा है जिसके दोनों खड़े भाग मेहराब के दोनों ओर लगाये जाते थे । बीच का भाग उसे अपने स्थान पर स्थिर रखा था । भवन के बीच का भाग पत्थर के टुकड़ो से भरा जाता था जिसमे तीन द्वार बनाया जाता था । एक बीच में तथा दोनों ओर छज्जा निकला हुआ था जो चार स्तम्भों पर आधारित था । काष्ठ की यह मुधर काफी अलंकृत थी जिसके दोनों ओर पत्थर में उत्कीर्ण उभरी हुई खिड़कियाँ है जिसमें जाली तथा दीवार बने है । इस प्रकार पत्थर तथा काष्ट का अदभुत संगम भाजा में देखने को मिलता है । मुधर के सामने प्रदक्षिणापथ का गलियारा है जो लगभग 2.5 फुट चौड़ा है । इसके किनारे से स्तम्भों की कतरे है जो 11 फुट ऊँची तथा 5 फुट भीतर की ओर झुकी हुई है तकि ढोलाकार भारी छत का जो काष्ठनिर्मित है, उसका बाहर की ओर फैलाव न हो । ये कला के उन्नत तकनीक का उत्कृष्ट नमूना है। छत का उपरी भाग भूतल से 29 फुट ऊँचा है । चैत्यशाला के अंतिम किनारे पर पूजा स्थल है।

स्मारक का एक उल्लेखनीय हिस्सा 14 स्तूपों का एक समूह है, पांच अंदरूनी और नौ अनियमित उत्खनन के बाहर है। ये स्तूप समूह चैत्यगृह से कुछ ही दुरी पर स्थित है। इनके अंडभाग के उपरी हिस्से पर वेदिका की ओर लगी थी । स्तूप में भी काष्ठ शिल्प का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया गया था । स्तूप की हर्मिका तथा छत्र काष्ठ के बने हुए थे । चट्टान में कटा हुआ ठोस स्तूप के दो भाग है नीचे का भाग लम्बा तथा उसके उपर का भाग वृताकार गुम्बद की भांति है जिस पर काष्ठ की हर्मिका तथा छत्रावली लगी थी जो अब नष्ट हो गए है । पर्सी ब्राउन के अनुसार स्तूप का अधिकांश भाग काष्ठ का ही बना है । लकड़ी की एक ओट थी जो दो तल्ला थी । यह स्तम्भों पर आधारित था जिसमें तीन द्वार थे । स्तम्भों के खाली जगहों के बीच वेदिकाएं थी जिसपर अलंकरण के लिए मूर्तियाँ लेप लगाकर उभरी हुई तथा रंगीन फेरस्कोविधि द्वारा बनायीं गयी थी । स्तूप निवासी भिक्षुओं के अवशेष हैं, जो भाजा में निधन हो गए, और तीन भिक्षुओं, अम्पीनिका, धामगिरी और संगदीना के नाम से शिलालेख प्रदर्शित करते हैं। स्तूप शो में से एक स्टेविराना भद्राता का अर्थ है सम्मानित आदरणीय सम्मान। स्तूप विवरण भिक्षुओं और उनके संबंधित खिताब का नाम दिखाते हैं। स्तूपों को बहुत विस्तृत रूप से नक्काशीदार बनाया गया है और उनमें से दो के ऊपरी हिस्से में एक अवशेष बॉक्स है। भिक्षुओं के नाम थेरास के साथ शीर्षक दिया गया है।

भाजा में विहार भी पाये गए है जो बौद्धों का आवास गृह होता था । इस विहार का मुख्य मंडप 17.5 फुट लम्बा है । इसका पूर्वी सिरा 7 फुट तथा पश्चिमी सिरा 9.5 फुट चौरा है । पिछले भाग में दीवार बने है जिसमें दो द्वार है । भीतर का मण्डल 16 फुट 7 इंच चौड़ा है जिसके तीनों ओर भिक्षुओं के लिए कोठरिया बनी है । हर कोठरी में सोने के लिए पत्थर की चौकी बनाई गई है । मुखमंड़प के पूर्वी छोड़ पर एक स्तम्भ तथा एक अर्द्धस्तम्भ है

जिसके शीर्ष भाग में आवांगमुखी पंखुड़ियों से भरे हुए कमल तथा उपर मानवाकृति बनी है विहार के दो दृश्य काफी उल्लेखनीय है जो मुखमंड़प के पूर्वी छोड़ के प्रवेश द्वार के दोनों ओर उत्कीर्ण है । दोनों के बाएं – दुर्भाग्यवश अच्छी तरह से संरक्षित नहीं – राहतएं चार घोड़ों के सूर्य रथ द्वारा खींची गई सूर्य पर दिखा सकती हैं जो एक प्राचीन अनियमित रथ की तरह काम करती है । मुख्य चरित्र का दृश्य अग्रसर एक कफ में है; रील थोड़ा नीचे लटका । घोड़ों के नीचे एक घुमावदार, भारी, मोटी आकृति है जो एक मुश्किल पहचानने योग्य सिर के साथ है – शायद एक पराजित प्रतिद्वंद्वी या राक्षस । भगवान के बाल एक फटे हुए पगड़ी से ढके हुए हैं गर्दन के चारों ओर झुकाव कान की बाली और एक डबल सर्पिल माला गहने बनाते हैं । मुख्य चरित्र के बाईं ओर, एक नौकर के हाथ में एक फ्लाई व्हिस्की होती है । इस आकृति के बीच और भगवान एक स्क्रीन है – साथ ही एक सम्मान या राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में एक धूप का छाया । दरवाजे के प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर राहत से सूर्य के भाई इंद्र, हाथी पर सवारी कर सकते हैं, जो अपने पेड़ के साथ एक पेड़ पकड़ लेता है; एक व्यक्ति हेडफर्स्ट गिरने लगता है । हाथी के नीचे और इसके सामने मनुष्यों की एक बहुतायत को पहचानना है – चाहे अनुक्रम या भागने वाले विरोधियों के साथ अस्पष्ट है । अपने दाहिने हाथ में इंद्र में एक हाथी रॉड (अंकुस) है, जिसके साथ पशु आदेश प्रसारित किए गए थे । उसके बाएं हाथ से उसके पास गर्दन से लटका हुआ फूल माला है; वह अपनी कलाई के चारों ओर एक कफ पहनता है । सिर और कान आभूषण विपरीत तरफ सूर्य के आंकड़े के समान हैं । इंद्र के पीछे एक झंडे के साथ एक नौकर और हथेली के तने के साथ बैठता है, जिसका उपयोग हवा के प्रशंसकों के रूप में किया जाता था; वह अपने कमर के चारों ओर एक अजीब कटा हुआ स्कर्ट पहन रहा है । दरवाजा फ्रेम

दृश्य में शामिल है; दाहिने पैर के सामने और हाथी के बाएं पैर के नीचे, एक बाड़ (हर्मिका) के किनारे एक पेड़ देखा जा सकता है ।

भाजा में काष्ठशिल्प का प्रयोग काफी बड़े पैमाने पर किया गया था । शिलागत उकेरी गई अलंकरण तथा काष्ठकर्म का सुन्दर सांगोपान्न केवल भाजा में ही मिलता है । यहाँ के स्तम्भ भी बिलकुल सादे थे । काष्ठ शिल्प का प्रयोग बाहरी साज सज्जा के लिए किया जाता था । भाजा चैत्यगृह में मूर्तिशिल्प का अभाव था परन्तु कहीं- कहीं प्रतीक चिन्ह पाए गए है । मंडप के स्तम्भों पर पांच मांगलिक चिन्ह त्रिरत्न, नन्दिपाद, श्रीवत्स, चक्र, मंडलाकृति आदि पाया गया है । इस प्रकार हम पाते है की भाजा चैत्य, विहार तथा स्तूप अपने वास्तुविन्यास, उतम कोटि के काष्ठ शिल्प, बेहतर प्रस्तर प्रयोग तथा कोई विशेष अलंकरणों के कारणों काफी महत्वपूर्ण है ।